प्रथम अध्याय

यात्रा साहित्य का स्वरूप निर्धारण

1.1 यात्रा एक परिचय

1.2 यात्रा साहित्य की परिभाषा

1.3 यात्रा साहित्य की उपादेयता

1.4 तुलनात्मक अध्ययन एवं स्वरूप

1.5 तुलनात्मक अध्ययन की परिभाषा

1.6 तुलनात्मक अध्ययन का महत्व

1.7 तुलनात्मक अध्ययन की आवश्यकता

प्रथम अध्याय

1. यात्रा साहित्य का स्वरूप निर्धारण:

मनुष्य के जन्म से लेकर मृत्यु तक निरंतर यात्राएं चलती रहती हैं। मनुष्य का सम्पूर्ण जीवन एक यात्रा ही हैं। जहां वह जीवन के विभिन्न उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए संघर्ष करता हुआ अनेक विपदाओं का सामना करता है। इन संघर्षमय परिस्थितियों को पूर्ण करके वह आत्मीय सुख की चाह रखता है। फिर उसकी एक इच्छा पूरी होती है, तो दूसरी चार इच्छाएं सामने खड़ी होती है। अब मनुष्य पुनः उन चार इच्छाओं को प्राप्त करने में लग जाता है। और फिर उसकी अगले पड़ाव की यात्रा शुरू हो जाती है। मनुष्य के संपूर्ण जीवन में कहीं भी ठहराव, एक स्थान पर रुक जाना दिखाई नहीं देता। यह सम्रग प्रकिया मनुष्य के जीवन की यात्रा ही है।

हिंदी साहित्य में यात्रा लेखन का आरंभ आधुनिक युग से माना जाता है। लेकिन क्या उससे पहले यात्राएं नहीं होती थी ? यात्राएं होती थी, लेकिन वह साहित्य की विधा नहीं थी। जब से मनुष्य की उत्पत्ति हुई, जब से ब्रह्मांड का उदभव हुआ है, सृष्टि का निर्माण हुआ तब से सम्रग ब्रह्मांड में यात्राएं हो रही हैं। प्रकृति के सारे तत्व में यात्रा विद्यमान हैं। प्रकृति में ऐसा कोई तत्व नहीं हैं, जो यात्रा न करता हो। बादल, नदी, ग्रह, उपग्रह, तारे प्रकृति में ये सारे तत्व यात्री ही हैं। जो एक स्थान से दूसरे स्थान की यात्रा करते हैं।

मुक्तिबोध की कविता 'ओ मेघ' के द्वारा हम बादल की यात्रा को समझने का प्रयास करेंगे।

"ओ मेघ, पुराने हो पर बार-बार आते हो

पुन: पुन: लौटते स्वप्न के गहन सत्य से....

इसलिए/तुम नए-नए लगते हो।

बरस बरस कर, धरती रसा बनाकर

अशेष होकर अपना चरित पूर्ण करते हो।

खूब अनुभवी बहुत पुराने होकर भी तुम,

बिल्कुल मौलिक नए-नए तुम कहलाते हो।

विलीन होकर, जन्म ग्रहण करने का तुमको एक नशा है

इसलिए कि, श्रेयस की प्रेरणा गहन है आत्मवशा है

ओ प्रपितामह के प्रपितामह, नवल रूप धर

तुम श्रेयस की उत्तेजना-प्रेरणा-श्री हो

मन में घुलती हुई पंक्ति के प्रतीक भी हो

बार-बार आते हो, नए-नए तुम कहलाते हो।"[1]

बादल भी बरसने से पहले समुद्र से वाष्प के रूप में जल को इकठ्ठा करते हैं। उसके बाद उस जल को बादल वर्षा रूपी बारिश के माध्यम से पुनः धरती पर बरसाते हैं। यहां हम बादल के निर्माण से लेकर बारिश की संघर्षमयी यात्रा देख सकते हैं। समान बात मुक्तिबोध ने कविता में प्रस्तुत की है कि, हे ! बादल तुम तो बहुत पुराने हो, जब से धरती बनी है तब से तुम हो, फिर भी तुम बार-बार आते हो। बादल पिघलकर हमें जल देते हैं। वह स्वयं को मिटाकर हमारे लिए, प्रकृति के लिए जीवनदायी कार्य करते हैं, वह समाप्त होकर पुनः जन्म लेते हैं। इस समग्र कविता में बादल हमें निस्वार्थ भाव से लोक कल्याणकारी कार्य करते रहने का पाठ पढ़ा रहा है। एवं बादल के बनने से लेकर समाप्त होने की यात्रा का चित्रण लेखक ने बहुत ही सूक्ष्मता से किया है। स्वयं के जीवन से कैसे जनकल्याण का कार्य किया जा सकता है बादल उसकी प्रेरणा हैं।

इस तरह नदियां भी अपने मार्ग में आने वाले विशाल पहाड़, पर्वतों को चीरकर अपना रास्ता ढूंढ निकालती है। एक यात्री कभी स्थिर होकर एक जगह पर नहीं बैठ सकता, नदी इसका उत्तम उदाहरण है। क्योंकि नदियां हमेशा अपना मार्ग बनाकर बहती रहती हैं। यह समग्र प्रक्रिया भी यात्रा का स्वरूप ही है।

मैथिलीशरण गुप्त की कविता 'निर्झर', इसमें लेखक ने नदी की यात्रा का वर्णन किया है, वह इस प्रकार हैं-

"निर्झर

शत शत बाधा बन्धन तोड़, निकल चला मैं पत्थर फोड़।

प्लावित कर पृथ्वी के गर्त्त, समतल कर बहु गहर गर्त्त, दिखलाकर आवर्त्त-विवर्त,

आता हूँ आलोड़-विलोड़; निकल चला मैं पत्थर फोड़।

पारावार मिलन की चाह, मुझे मार्ग की क्या परवाह,

मेरा पथ है स्वतः प्रवाह,

जाता हूँ चिरजीवन जोड़; निकल चला मैं पत्थर फोड़ ।

गढ़कर अनगढ़ उपल अनेक, उन्हें बनाकर शिव सविवेक,

करके फिर उनका अभिषेक, बढ़ता हूँ निज नवगति मोड़

निकल जला मैं पत्थर फोड़ ।

हरियाली है मेरे संग, मेरे कण कण में सौ रंग,

फिर भी देख जगत् के ढंग, मुड़ता हूँ मैं भृकुटि मरोड़;

निकल चला मैं पत्थर फोड़।

धर कर नव कलरव निष्पाप, हर कर संतप्तों का ताप,

अपना मार्ग बनाकर आप, जाऊँ सब कुछ पीछे छोड़;

निकल चला मैं पत्थर फोड़ ।

है सबका स्वागत-सम्मान, करे यहाँ कोई रस-पान,

मेरा जीवन गतिमय गान, काल ! तुझी से मेरी होड़;

निकल चला मैं पत्थर फोड़ ('स्वस्ति और संकेत' से)।"[2]

प्रस्तुत कविता में कवि ने एक झरने की जीवन यात्रा का वर्णन किया है। झरना कहता है- जब मैं बहता हूँ तो पृथ्वी के गर्त्त(गहराई) तक पहुँचकर सब कुछ भिगो देता हूँ। जहाँ कहीं छोटे-बड़े गड्ढे होते हैं, वहां भूमि को समतल बनाकर मैं आगे बढ़ जाता हूँ। झरना कहता है, मेरा रास्ता स्वनिर्मित है। मेरी चाह तो

केवल किनारे से मिलने की होती है। मैं रास्ते की परवाह नहीं करता, तथा उलट-पुलटकर पत्थर को तोड़कर आगे निकलता हूँ। झरना कहता है, मेरा जीवन हर किसी के लिए सुख प्राप्ति के लिए उपलब्ध है। मेरा जीवन निरंतर चलते रहने वाला, प्रवाहमयी है। कवि ने झरने के बहाव में जीवन दर्शन का चित्रण प्रस्तुत किया है। एवं जीवन में पत्थर रूपी बाधाओं का आना स्वाभाविक है, उनसे डरे बिना उनका सामना करके आगे बढ़ना चाहिए। इससे यह सिद्ध होता है कि, झरना भी एक यात्री का प्रतीक है।

ब्रह्मांड के सारे ग्रह यात्राएं करते हैं। वह एक स्थान पर स्थिर नहीं है, उनके नियमित भ्रमण से धरती पर सुबह-शाम होती है। मौसम बदलता है, ऋतुएं बदलती हैं। इसी तरह समग्र मनुष्य जाति का इतिहास अगर हम देखें तो, आरंभ से लेकर आज तक मनुष्य यात्रा करके ही यहां तक पहुंचा है। यह मनुष्य की यात्रा है, एक समाज की यात्रा है व प्रकृति की यात्रा है। यहाँ सब कुछ भ्रमण शील है। इन सब में एक परिवर्तन हो रहा है। यह निरंतर यात्रा का परिणाम है।

प्रारंभ में मनुष्य जंगलों में रहता था, वह अपने जीवन निर्वाह के लिए जंगलों में पशुओं का शिकार करता था। जंगलों से कंदमूल फल इकट्ठा करता था। एवं रहने के लिए नदियों के किनारे वाले स्थान को पसंद करता था। इसके अनेक सबूत हमें सिंधु घाटी, हड़प्पा सभ्यता एवं मेसोपोटामिया सभ्यता में देखने को मिलते हैं। हमारे सामने इसका प्रमाण है कि, विश्व की अधिकांश सभ्यताओं का विकास नदियों के किनारे हुआ है। तथा आज के अधिकतर महानगर समुंद्र या नदियों के किनारे ही विकसित हुए हैं।

यह पुरानी (पौराणिक) सभ्यता के लोग व्यापार के उद्देश्य से, पशुपालन के उद्देश्य से, जीवन निर्वाह के उद्देश्य से, एक प्रदेश से दूसरे प्रदेश की यात्रा करते थे। इसके साक्ष्य हमें आज भी ताम्रपत्रों, भित्तिचित्रों, पांडुलिपियों में देखने को मिलते है। इससे यह ज्ञात होता है कि यात्राएं अनादिकाल से होती रहीं हैं। इस सम्रग सृष्टि में प्रत्येक जीवित-अजीवित तत्व आरंभ से लेकर अब तक यात्राएं ही कर रहे हैं। और यह प्रक्रिया आगे भी इसी तरह चलती रहेगीं।

1.1 यात्रा एक परिचय

यात्रा साहित्य के कारण मनुष्य विश्व में घूम कर आ सकता है। यात्रा साहित्य के कारण कई तरह की जानकारी उसे प्राप्त होती है। कभी-कभी यात्रा वर्णन पढ़ने मात्र से ही उसे उस स्थल को देखने का आभास हो जाता है। भारत की ही नहीं पूरे विश्व की जानकारी यात्रा-साहित्य के कारण प्राप्त होती है। यात्रा साहित्य में धार्मिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक, नैतिक इत्यादि विषयों की जानकारी प्राप्त होती

है। यात्रा एक परिचय में हम देखेंगे कि यात्राएं कब से एवं कैसे आरंभ हुई। यात्राओ का स्वरूप क्या होता है, उसके कितने प्रकार होते है। इन सबका निर्धारण, यात्रा के उद्देश्य एवं प्रयोजन, साधन व स्थान के आधार पर किया जाता रहा है। कुछ प्रमुख यात्रा भेदों का परिचय हम यहाँ प्राप्त करेंगे जो इस प्रकार है-

सांस्कृतिक यात्रा : किसी सांस्कृतिक उद्देश्य को केंद्र में रखकर की गई यात्रा सांस्कृतिक यात्रा कहलाती है। इस प्रकार की यात्राएं किसी संस्कृति को समझने के प्रयोजन से संस्कृतिकर्मी या संस्कृतियों के संरक्षण, उनके विकास या विविध संस्कृतियों के साझी विरासत के उद्देश्य से भी की जाती रही है।

धार्मिक यात्रा : मनुष्य जाति सबसे अधिक धार्मिक यात्राएं करती आयी हैं। वह चाहे देश हो या विदेश। धर्म के उद्देश्य से की जाने वाली यात्राएं धार्मिक यात्राएं कहलाती है। हिन्दू धर्म में चार धाम की यात्रा, मानसरोवर की यात्रा, वैसे ही इस्लाम में मक्का मदीना (हज) की यात्रा, जैन धर्म मे 24 तीर्थंकर यात्रा, सिख धर्म मे हरिमंदिर साहिब (स्वर्ण मंदिर) यात्रा। इस तरह भारतीय धर्म दर्शन मे यात्राओं का महत्व बताया गया है।

भौगोलिक यात्रा : इस तरह की यात्राओं का उद्देश्य किसी भूखंड को भौगोलिक रूप से समझने का होता है। भूगर्भ शास्त्रियों के द्वारा अक्सर इस प्रकार की यात्राएं की जाती हैं।

ऐतिहासिक यात्रा : ऐतिहासिक यात्राएं अक्सर किसी स्मारक, खंडहर, प्राचीन स्थलों या ऐतिहासिक जगहों की की जाती है। जिसका मुख्य उद्देश्य कुछ खोज करना होता है। पुरातत्त्व विभाग की इकाईयां इस प्रकार की यात्राएं अधिक करती है।

राजनैतिक यात्रा : शासन सत्ता व साम्राज्यों के द्वारा किसी राजनैतिक उद्देश्य के लिए एक राज्य से दूसरे राज्य या एक देश से दूसरे देश के राजनायिकों के द्वारा की गई यात्राएं राजनैतिक यात्राएं कहलाती हैं। इस प्रकार की यात्रा प्राचीन काल से होती आयी हैं और आगे भी होती रहेगीं।

साहित्यिक यात्रा : किसी साहित्यिक प्रयोजन के लिए की गई यात्रा को साहित्यिक यात्रा कहते है। देश से लेकर विदेश तक इस प्रकार की खूब यात्राएं होती रही हैं। कई बार यह व्यक्तिगत स्तर पर की जाती है तो कई बार सरकार द्वारा आयोजित की जाती रही है। विश्व हिन्दी सम्मेलन या साहित्यिक बैठक सब साहित्यिक यात्राएं ही होती हैं।

मनोरंजन प्रधान यात्रा : कुछ यात्राएं नितांत रूप से मनोरंजन के लिए की जाती है। ऐसी यात्राएं किसी पर्वत-पहाड़, नदी, झरने या ऐसे ही प्राकृतिक स्थानों की हो सकती है। इस प्रकार की यात्राएं वर्तमान में अधिक देखने को मिलती है।

स्वदेशी यात्रा : यह एक यात्रा का प्रकार है, जो अपने देश के विभिन्न भागों में की जाती है। स्वदेशी यात्राओं का मुख्य प्रयोजन अपने देश के विभिन्न हिस्सों को देखना-समझना व लोगों से मिलना-जुलना होता है। यह देश की भौगोलिक सीमा के भीतर की यात्राएं होती हैं।

विदेशी यात्रा : विदेशी यात्राएं एक देश से दूसरे देश के आवागमन को कहां जाता है। इन यात्राओं की अपनी कुछ शर्तें व कायदे-कानून होते है। इन यात्राओं में लगभग सब कुछ पहले से तय होता है। एक प्रकार से यह सब नियोजित यात्राएं होती हैं।

इस प्रकार हम देखें तो पाते है कि यात्राएं कई प्रकार से की जाती है और कई तरह की होती है। इनका अपना उद्देश्य, प्रयोजन व महत्त्व होता है। जो किसी न किसी रूप में मनुष्य व समाज को देखने समझने और उसे जोड़ने में सहायक सिद्ध होती आयी है और आगे भी होती रहेगीं।

प्रमुख यायावर एवं उनकी यात्राएं : अपने विविध रूपों में अनादिकाल से होती चली आयी है, और अपने महत्त्व को स्थापित भी करती रही हैं। यहाँ पर कुछ प्रमुख यात्रियों द्वारा की गई यात्राओं का परिचय इस प्रकार से है-

प्राचीन काल की यात्राएं कठिन, लंबी और ज्यादा जोखिम पूर्ण होती थी। क्योंकि उस समय की ज्यादातर यात्राएं समुद्र मार्ग और अनजाने रास्तों से किसी न किसी प्रकार के खोज के लिए की जाने वाली यात्राएं होती थी। जिसमें कई बार यह भी नहीं पता होता था कि कहाँ पहुचेंगे और कैसे पहुचेंगे। मंजिल तक पहुचेंगे या रास्ते में ही कहीं काल कलवित हो जायेगें। और यदि कहीं-कहीं किनारें मिलते थे तो उसकी अपनी एक यातनाएं होती थी। ये यात्राएं अनिश्चित से निश्चित की यात्राएं थी। जिसमें किसी स्थान की खोज, किसी नयें समाज की खोज, किसी नयें खाद्य पदार्थ की खोज, किसी नयें खनिज की खोज, किसी नयीं संस्कृति की खोज, किसी महत्त्वपूर्ण स्थल की खोज, किसी नयें प्रकार के जीव जन्तु इत्यादि अनगिनत खोजें यात्रियों के हाथ लगी। जो मनुष्य व समाज के परिष्कृत, परिमार्जित, निर्माण व उसे समृद्ध करती आयी हैं।

इस कालखंड में अनेक घुमक्कड़ यात्री हुए जिन्होंने एक राज्य से दूसरे राज्यों में यात्रा की, एक देश से दूसरे देश की यात्राएं की इन यात्रियों में एक नाम बहुत प्रमुखता के साथ लिया जाता है वह नाम है चीनी यात्री **ह्वेनसांग**।

चीनी यात्री ह्वेनसांग की भारत यात्रा : "सातवीं सदी में चीनी यात्री ह्वेनसांग भारत आया था। जो एक ख्याति प्राप्त बौद्ध भिक्षु था। यह हर्षवर्द्धन के शासन काल मे भारत आने वाला यात्री था। इस चीनी यात्री ने बारह वर्षों से अधिक समय तक सम्रग भारत का भ्रमण किया। अपनी इस यात्रा में ह्वेनसांग ने बुद्ध के जीवन से संबंधित स्थानों कपिलवस्तु, बनारस, गया., कुशीनगर, की यात्राएं की तथा भगवान बुद्ध के जीवन को समझने का, ज्ञान के प्रकाश को प्राप्त करने का प्रयास किया। ई.सन 645 में 'ह्वेनसांग' लगभग 650 जितनी पुस्तकें एवं पांडुलिपियां अपने साथ लेकर वापस चीन चला गया। और शेष जीवन उसने अनुवाद के कार्य में लगा दिया।"[3]

इस सम्पूर्ण यात्रा में चीनी यात्री ने भारत देश के नगरों तथा गांवो का वर्णन सूक्ष्मता से किया है। और समाज में व्याप्त कुरीतियों व अच्छी परंपराओं का वर्णन भी किया है। इसके साथ ही भारत की आर्थिक दशा, आभूषणों का वर्णन, वस्त्रों का वर्णन, तथा भारतीय भोजन, अनुशासन की बढ़-चढ़ कर प्रशंसा की है। ह्वेनसांग के अतिरिक्त अनेक प्रमुख यात्री भारत आए, उनके नाम निम्नलिखित है। "तावयुग, तायिगं, हुईसांग, सुयेनच्वांग, हुइनि, सुयनेचिड, सुयेनताई, चाउही, सिपिन, ईत्सिग, ताउफांग, उंगापो, सुयेनहुई, लुंग, मिंगयुएन, वानकी, मोक्षदेव, कुईचु'ग, सिनचिउ, तावालिन, सुयेनता, सि-जि, ऊहिंग तथा सुंगयुन आदि।"[4] इन यात्रियों का समय सन 414 ई. से 1200 ई. के बीच का माना गया है।

ई.सन 1200 से ई.सन 1500 तक ये वह समय था, जब मुगलों का भारत में आगमन हो रहा था। अपने राज्य का विस्तार करने के उद्देश्य से बाहरी आक्रमण कर्ता भारत आ रहे थे। उस समय भौगोलिक स्तिथि की जानकारी उन यात्रियों द्वारा प्राप्त की जाती थी जो धर्म के प्रचार-प्रसार के उद्देश्य से एक देश से दूसरे देश की यात्राएं करते थे। मुगलकालीन कुछ प्रमुख यात्रियों के नाम इस प्रकार है – "(1200-1526 ई.) अबुल फ़िदा (1273-1373 ई.) जकरिया कज़बीनी (1283 ई.), सूफी दुमिश्की (1327 ई.), इब्नबतूता (1325-1346 ई.), शहाबुद्दीन उमरी (1346 ई.), अब्दुर्रज्जाक (1442 ई.) आदि अनेक मुसलमान यात्री भारत आए।"[5]

इनके अलावा इस कालखंड में यात्राओं के अनेक उदारहरण देखने को मिलते हैं। जिसमें कई विदेशी यात्री भौगोलिक प्रदेश की खोज करने निकले थे, तथा कई यात्री धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए तो कुछ यात्री साहित्यिक कारणों से यात्राएं करते थे। अनेक यात्री ऐसे भी थे जो, व्यापार के उद्देश्यों से यात्रा करते थे। ऐसे ही साहसिक यात्रियों (घुमक्कड़ों) में से कुछ प्रमुख यात्रियों का वर्णन हम यहां करेंगे। जो इस प्रकार से है-

अलबरूनी:-

अलबरूनी ग्यारहवीं सदी में उज्बेकिस्तान से भारत आया था। वह यूनानी, सीरियाई, फ़ारसी एवं संस्कृत का अच्छा जानकार था। "भारत में रहते हुये अलबरूनी ने संस्कृत भाषा के पुस्तकों एवं भगवतगीता का अध्ययन किया और **तहकीकात-ए-हिंद** नामक पुस्तक की रचना की।"[6]

इस पुस्तक में अलबरूनी ने भारत की आर्थिक एवं सामाजिक जीवन स्तिथि का चित्रण किया है। अलबरूनी की यह पुस्तक हमें तत्कालीन समय की परिस्थितियों से अवगत कराती हैं। इसके अतिरिक्त अलबरूनी ने संस्कृत की अनेक पुस्तकों का फ़ारसी भाषा मे अनुवाद किया।

मार्को पोलो:-

मार्को पोलो इटालियन यात्री था। वह व्यापार के उद्देश्य से तेरहवीं सदी में भारत आया था। उसने ई.स.1259 में सड़क के रास्ते एशिया खंड में प्रवेश किया, और जापान से होते हुए चीन आया। फिर भारत आने के लिए उसने सिल्क रूट का सहारा लिया। "मार्को पोलो को रेशम मार्ग की यात्रा करने वाला सर्वप्रथम यूरोपी यात्री माना जाता है।"[7] मार्को पोलो ने जापान, चीन, और भारत में यात्रा की, अपनी इन यात्राओं में वह इन देशों की संस्कृति, व्यापार, और परंपरा को देखकर अत्यंत प्रभावित हुआ। उसने यात्रा पर आधारित पुस्तक लिखी। पुस्तक में उसनें इन देशों में उसके अनुभवों का विवरण दिया है। तथा पश्चिमी देशों को पूर्व के देशों की जानकारी उपलब्ध कराई। इसी कारणवश उसे एक खोजी यात्री एवं लेखक भी माना जाता है।

इब्न बतूता:-

इब्न बतूता मोरक्को का यात्री था। वह चौदहवीं सदी में सिंध, भारत आया था। वह धार्मिक उद्देश्य से यात्रा पर निकला था। इब्नबतूता को मोरक्को से हज दर्शन करने जाना था। जब वह हज की यात्रा पूर्ण कर

लेता है, तब उसकी इच्छा और विभागों को देखने की और अधिक लोगों के जीवन के बारे में, लोगों की संस्कृति को देखने की, जानने की जिज्ञासा उसे भारत ले आती है।

वास्कोडिगामा:-

वास्कोडिगामा पुर्तगाली यात्री था। जिसे भारत देश की खोज करने का श्रेय दिया जाता है। पंद्रहवी सदी मे उसकी यात्रा का एकमात्र उद्देश्य व्यापारिक खोज था। वास्कोडिगामा समुद्र के रास्ते भारत पहुंचने वाला पहला यूरोपीय यात्री माना जाता है। उसकी इस खोज के फलस्वरुप जलमार्ग के द्वारा दुनिया को भारत आने का रास्ता मिला, और व्यापार में तेजी आई। अब पुर्तगाली व्यापारी भारत आने लगे और इसी समुद्री मार्ग से फ्रांसीसी एवं ब्रिटिश भी भारत आये थे।

हिन्दी साहित्य में इस कालखंड में कुछ रचनाएं प्राप्त होती है। जो अपने आप में ऐतिहासिक है। प्राप्त रचनाएं इस प्रकार से है- 'बनयात्रा' ई सं 1600 मे हस्तलिखित रचना मिलती है, जिसे प्रथम यात्रावृत्तांत माना जाता है, इसके लेखक के बारे मे सटीक जानकारी न होने के कारण इसमें विद्वानों में मतभेद है। हस्तलिखित रचनाओं मे 'बात दूर देश की', 'बद्री-यात्रा कथा', 'बन यात्रा परिक्रमा', 'ब्रज चौरासी कोस बन यात्रा', 'बद्रीनारायण सुगम यात्रा' जिस काल मे यह रचनाएं मिल रही है, उस समय मे ब्रज भाषा का ही प्राधान्य था, इसलिए यह यात्रा विवरण ब्रज भाषा में ही अधिक मिलते हैं।

इस तरह इस कालखंड में हमें यात्रा के ऐसे अनेक साक्ष्य देखने को मिलते हैं, जिसमें मनुष्य किसी एक स्थान पर स्थिर नज़र नहीं आता। वह नए देश की खोज,नयी सभ्यता, नयी संस्कृति, व्यापार के लिए मार्ग एवं धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए यात्राएं कर रहा था। इससे यह सिद्ध होता है कि, यात्राएं मध्यकाल में सबसे अधिक हुई, और इन यात्राओं ने मानव कल्याण की भूमिका निभाई। इस काल में यात्राओं के इतिहास से पता चलता है की, हेरोडोटस, सुलेमान सौदागर, मैगस्थनीज, फाह्यान, अबूजैद, अल इदरसी, बनियर टैनियर आदि विदेशी यात्रियों ने व्यापार एवं उद्योग के सिलसिले से भारत की पवित्र भूमि पर अपने पैर रखे थे।

वैज्ञानिक आविष्कारों ने आधुनिक काल में यात्रा की गति में तेजी लाने का महत्वपूर्ण कार्य किया है। आज हम हवाई जहाज के माध्यम से दुनिया के एक कोने से दूसरे कोने में कुछ ही पल में पहुंच सकते है। आधुनिक काल में यात्रा को, यात्रा साहित्य की एक विधा के रूप में स्थान प्राप्त हुआ। भारतेन्दु युग से

इसका सूत्रपात ई.सं 1900 से माना जाता है। लेकिन सुरेन्द्र माथुर अपनी पुस्तक 'यात्रा–साहित्य का उद्भव और विकास' में यात्रा साहित्य का कालविभाजन समय ईस. सन 1600 से वर्तमान युग तक मानते है।

उनके द्वारा किया गया काल विभाजन इस प्रकार से है- हस्तलिखित ग्रन्थों का युग (1600-1666 ई.), भारतेन्दु-युग (1850-1900 ई.), द्विवेदी-युग (1900-1920 ई.), उत्तर द्विवेदी-युग (1921-1955 ई.), वर्त्तमान-युग (1955 से अब तक) लेकिन यात्रा साहित्य के इतिहास को सरलता व सुगमता की दृष्टि से हम निम्नलिखित रूप से विभाजित कर सकते है।

भारतेन्दु युगीन यात्रा साहित्य : हिंदी साहित्य में अन्य गद्य-विधाओं की भांति ही भारतेन्दु-युग से यात्रा-साहित्य का आरम्भ माना जाता है। भारतेन्दु हरिश्चंद्र द्वारा लिखित यात्रा साहित्य इस प्रकार से है- सरयू पार की यात्रा, लखनऊ की यात्रा, मेहदावल की यात्रा हरिद्वार की यात्रा व वैद्यनाथ की यात्रा इत्यादि उनके प्रमुख यात्रा साहित्य है। जिनमें रीति-रिवाज, प्रकृति सौन्दर्य, खान-पान एवं दैनिक जीवन का बहुत ही रोचकपूर्ण वर्णन मिलता है। भारतेन्दु युग में लिखित अन्य यात्रा कृतियों में प्रताप नारायण मिश्र कृत विलायत यात्रा, बालकृष्ण भट्ट कृत गया यात्रा, भगवान दास वर्मा कृत लंदन की यात्रा, दामोदर शास्त्री कृत मेरी पूर्व दिगयात्रा, इत्यादि इस युग की विशेष उल्लेखनीय रचनाएं प्राप्त होती है।

द्विवेदी युगीन यात्रा साहित्य : द्विवेदी युग में यात्रा साहित्य का लेखन व प्रकाशन प्रचुर मात्रा में होता रहा है। द्विवेदी युग की प्रतिनिधि व हिन्दी साहित्य की महत्त्वपूर्ण पत्रिका सरस्वती में अनेक यात्रा साहित्य प्रकाशित हुए है। इस काल में यात्रा साहित्यकारों में स्वामी सत्यदेव परिव्राजक का नाम बड़े ही आदर के साथ लिया जाता है। उन्होंने अमरिका दिग्दर्शन, अमरिका भ्रमण, मेरी कैलाश यात्रा जैसी महत्त्वपूर्ण यात्रा साहित्य की रचनाएं लिखी। इसके अतिरिक्त इस काल में देवी प्रसाद खत्री की बद्रीकाश्रम यात्रा, ठाकुर गदाधर सिंह की चीन में तेरह मास, शिव प्रसाद गुप्त की पृथ्वी प्रदीक्षणा, इत्यादि इस कालखंड की प्रमुख यात्रा साहित्य की कृतियाँ है।

छायावाद युगीन यात्रा साहित्य : छायावाद का समय आते-आते हिन्दी साहित्य में यात्रा साहित्य एक लोकप्रिय विधा के रूप में अपना स्थान ग्रहण कर चुकी थी। साथ ही साहित्य में इसे महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त हो चुका था। और अब हिन्दी के साहित्यकार प्रचुर मात्रा में यात्रा साहित्य पर काम कर रहे थे। इस कालखंड के भीतर जो सबसे लोकप्रिय नाम आता है वह है- 'महापंडित राहुल सांकृत्यायन' का। राहुल सांकृत्यायन का हिन्दी यात्रा साहित्य में सबसे ऊंचा व अभूतपूर्व योगदान है। यात्रा करते-करते इन्होंने

यात्रा साहित्य की अद्भुत पुस्तक 'घुमक्कड़शास्त्र' लिखी है। जो हिन्दी साहित्य की अति लोकप्रिय कृति है। इसके अतिरिक्त राहुल जी ने कई यात्रा संस्मरण लिखे जो इस प्रकार से है- तिब्बत में सवा वर्ष, मेरी यूरोप यात्रा, मेरी तिब्बत यात्रा, मेरी लद्दाख यात्रा इत्यादि इनके यात्रा साहित्य के ग्रंथ है। यायावरी को राहुल जी अपनी लेखनी का मूल प्रेरणास्त्रोत मानते हैं। और वे कहते है कि "यात्रा ने ही मेरे हाथ में जबरदस्ती कलम पकड़ा दी और स्वयं ही लेखन शैली बनती गई। कलम के दरवाजे को खोलने का काम मेरे लिए यात्राओं ने ही किया। इसलिए मैं इनका बहुत ही कृतज्ञ हूँ।"[8] इनके अतिरिक्त इस कालखंड में अनेक यात्रा ग्रंथ लिखे गए जिसमें कन्हैयालाल मिश्र कि 'हमारी जापान यात्रा', कृपानाथ मिश्र कि 'विदेश की बात', रामशरण विद्यार्थी कि 'कैलाश पथ पर' प्रमुख यात्रा साहित्य है। इन सब यात्राओं में प्रकृति के रमणीय स्थलों की जानकारी के साथ-साथ वहाँ की सभ्यता, संस्कृति, वहाँ की समाज व्यवस्था, राजनीति एवं धर्म संबंधी अनेकानेक जानकारियाँ प्राप्त होती हैं। ये सब यात्रा साहित्य किसी न किसी तरह से हमारे विचारों को विस्तार देने में सहायक सिद्ध होते हैं।

छायावादोंत्तर युगीन यात्रा साहित्य : छायावादोंत्तर युग एवं समकालीन दौर में यात्रा साहित्य अपने नयें आयामों के साथ प्रस्तुत होता है। यहाँ तक आते-आते इसके फ़लक में विस्तार होता है। पहले की अपेक्षा यात्राएं सरल व सुरक्षित हुई है। और यात्रा के प्रति लोगों का विश्वास भी बढ़ा है, और अब ज्यादा लोग यात्राओं पर निकल रहे है। इस कालखंड में कई महत्त्वपूर्ण रचनाएं हमारे समक्ष आती है। जो इस प्रकार है- बनारसीदास चतुर्वेदी कि 'रूस की साहित्यिक यात्रा', डॉ. नगेन्द्र कि 'तंत्रलोक से यंत्रलोक तक', यशपाल जैन कि 'रूस में छियालीस दिन', रामवृक्ष बेनीपुरी कि 'पैरों में पंख बाधकर', निर्मल वर्मा कि 'चिड़ों पर चाँदनी', अज्ञेय कि 'अरे यायावर रहेगा याद' इत्यादि महत्त्वपूर्ण यात्रा साहित्य की प्रमुख रचनाएं है।

समकालीन यात्रा साहित्य : हिन्दी साहित्य के वर्तमान समय में कई लेखक-लेखिकाएं यात्रा साहित्य पर खूब जमकर लिख रहे है, जिनमें वर्तमान महिला लेखिकाओं में ममता कालिया 'का नरक दर नरक', नासिरा शर्मा का 'जहाँ फव्वारे लहू रोते है', मधु काकरिया का 'बादलों में बारूद', कृष्णा सोबती का 'बुद्ध का कमंडल', अनुराधा बेनीवाल का 'आजादी मेरा ब्रांड', माला वर्मा व गुजराती प्रवास लेखिका प्रीति सेनगुप्ता, व लेखकों में श्री प्रकाश शुक्ल का 'देस देस परदेस', असगर वजाहत का 'अतीत का दरवाजा', अनिल यादव का 'वह भी कोई देस है महराज', 'कीडाजड़ी', विनोद कापड़ी का '1232 km' कोरोना काल में एक असंभव सफर, संजय कुमार का 'कटिहार से कैनेडी' इत्यादि महत्त्वपूर्ण रचनाएं

प्रकाशित हुई है। इन सब यात्राओं में यात्रा के साथ समय व समाज की पीड़ा भी व्यक्त हुई है। साथ ही साथ इन यात्राओं में समाज का संघर्ष एवं उसका सौन्दर्य भी समाया हुआ है।

इस प्रकार यदि हम सम्पूर्ण यात्रा साहित्य को देखे तो वह अपने समय, अपने समाज के साथ-साथ अतीत से जुड़कर हमारे वर्तमान में दखल करते हुए सुंदर स्वस्थ्य भविष्य निर्माण, समन्वयवादी समाज निर्माण, पर्यावरण निर्माण एवं सभ्यता व संस्कृति के नए आयाम को प्रस्तुत करते है। इस प्रकार यात्रा साहित्य सृजन व संरक्षण का साहित्य है। जो हमारे विचारों के आयाम को भी विस्तृत करता है। हमें समाज के साथ-साथ प्रकृति से जोड़ता है। हमें उद्बुद्ध करता है। हमारा विनिर्माण करता है।

1.2 यात्रा साहित्य की परिभाषा :

किसी विषय को समझने की सुगमता की दृष्टि से विद्वानों ने परिभाषा का निर्माण किया। परिभाषाओं के द्वारा किसी विषय पर विद्वानों के मत मतैक्य व उनकी राय को जानने, समझने की कोशिश की जाती है। परिभाषाओं के द्वारा किसी विषय को संपूर्णता में प्रस्तुत करने की विनम्र कोशिश होती है। यही कारण है कि, साहित्य में एक-एक विषय की अनेकानेक परिभाषाएं प्रस्तुत की जाती रही है। यात्रा साहित्य को विद्वानों ने अलग-अलग परिभाषित किया है। कुछ प्रमुख परिभाषाएं निम्नलिखित है-

संस्कृत विद्वान के मतानुसार :

नगेन्द्रनाथ बसु (हिंदी विश्वकोशकार) "विजय की इच्छा से कहीं जाना, चढाई, पर्याय, प्रस्थान, अभिनिर्माण, गमन, गम, प्रस्थिति। एक दशनार्थ देवस्थानों को जाना। स्थान से दूसरे स्थान को जाने की क्रिया आदि।"[9]

पाश्चात्य विद्वानों के मतानुसार :

मानक अंग्रेजी-हिन्दी विश्वकोश : "निश्चित समय में तय किया जाने वाला फासिला, मंजिल, पडाव, प्रयाण, प्रस्थान, प्रवास, सफर, यात्रा, देश भ्रमण, पर्यटन, सफर करना, यात्रा करना ।"[10]

फ्रांसिस बेकन : फ्रांसिस बेकन ने अपने एक निबंध ऑन ट्रेवल्स में लिखा था कि :- "यात्रा छोटे संदर्भ में शिक्षा है और बड़े संदर्भ में अनुभव।"[11]

मेकडोनल के अनुसार : "Goring, Departure, Journey, March, Military, Expedition, Festive trains, Procession, Pilgrimage, Festivity, Livelihood, Maintenance, Kind of Dramatic, Entertainment, Selling forth on a journey or march."[12]

अर्थात जो यात्रा के समस्त संभावित उद्देश्यों पर केंद्रित है, जिनके लिए यात्राएँ संपन्न की जाती हैं।

हिंदी के विद्वानों के मतानुसार :

यात्रा साहित्य के विभिन्न विद्वानों ने अपने अपने मतानुसार अनेक परिभाषाएं दी है। मनुष्य प्राचीन काल से यायावर प्रवृत्ति का रहा है। मनुष्य जीवन स्वयं एक यात्रा है। मनुष्य जीवन में यात्रा का अनन्य साधारण महत्व है। मनुष्य यात्रा के दौरान हुए अपने अच्छे और कटु अनुभवों को अपने परिजनों साथियों को सुनाता है। बोलने की क्रिया की बजाए लिखने अर्थात लिपिबद्ध करने की प्रक्रिया शुरू हुई, और यात्रा साहित्य का प्रारंभ हुआ। इसी आधार पर विद्वानों ने यात्रा साहित्य की परिभाषाएं दी है।

आदर्श हिन्दी शब्दकोश : "यात्रा एक स्थान से दूसरे स्थान को गमन करने की क्रिया, प्रस्थान, प्रयाण, तीर्थाटन, देवस्थान के दर्शन को जाना।"[13]

डॉ. सुरेन्द्र माथुर : "यात्रा का मनुष्य जीवन से अविच्छिन्न सम्बन्ध है। जीवनगत आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए मनुष्य सदैव से बड़े पर्वत, घनघोर जंगल और जलते हुए रेगिस्थानों की यात्रा करता आया है।"[14]

रामचन्द्र तिवारी : "यात्रा-वृत्त में देश-विदेश के प्राकृतिक रमणीयता, नर-नारियों के विविध जीवन-संदर्भ प्राचीन एवं नवीन सौंदर्य चेतना का प्रतीक कलाकृतियों की भव्यता तथा मानवीय सभ्यता के विकास के द्योतक अनेक वस्तु-चित्र यायावर लेखक के मानस रूप में रूपायित होकर वैयक्तिक रागात्मक उष्मा से दीप्ति हो जाते है।"[15]

डॉ. विश्वनाथप्रसाद तिवारी : "किसी विशिष्ट उद्देश्य के साथ जब किसी यात्रा का उसकी विशेषताओं के साथ वर्णन किया जाता है, जिससे समाज को उस वस्तु, जगह का यर्थाथ बोध हो यात्रा-साहित्य कहलाता है।"[16]

विश्वमोहन तिवारी : "सौन्दर्य बोध की दृष्टि से, उल्लास की भावना से प्रेरित होकर यात्रा करने वाले यायावर एक प्रकार से साहित्यिक मनोवृत्ति के माने जा सकते है और उनकी मुक्त अभिव्यक्ति को यात्रा साहित्य कहा जा सकता है।"[17]

डॉ. दीपक पाटील : "यात्रागत अनुभवों को जब लिपिबद्ध कर दूसरों को अनुभूत करने के लिए प्रस्तुत किया जाता है, वह यात्रा-साहित्य, यात्रा वर्णन कहलाता है।"[18]

श्रीप्रकाश शुक्ल : "यात्रा न तो होटल का आनंद है, न ही स्कूल का अनुशासन। वह तो एक अज्ञात सड़क पर चलते हुए पैरों का अहसास है, जहां हर अगला पाँव नहीं जानता कि वह पिछले से कितना भिन्न होगा। इसलिए भिन्नता का अहसास ही यात्रा की असल उपलब्धि होती है।"[19]

श्रीप्रकाश शुक्ल : "यात्राएं हमें मुक्त करती है। यात्राओं में होना, यातनाओं से मुक्त होना है।"[20]

डॉ. रेखा प्रवीण उपरेती के अनुसार : "मनुष्य के बाह्य और आंतरिक विकास के साथ यात्रा का गहरा और अटूट संबंध रहा है। इत्यादि मानव से आधुनिक मानव बनने की प्रक्रिया में मनुष्य की यायावर वृत्ति ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। भोजन और जीविका की खोज जैसी स्थूल भौतिक आवश्यकताओं से लेकर सौंदर्य तथा ज्ञान-प्राप्ति जैसे व्यापक उद्देश्यों तक यात्रा मानव की सहचरी रही है।"[21]

डॉ. विजयेन्द्र स्नातक : "हिंदी में यात्रावृत्त भारतेन्दु युग से लिखना शुरु हो गया था। किंतु उस समय जो यात्रावृत्त लिखे गये थे, वह विवरणात्मक थे और उनमें साहित्यिक शैली का सौष्ठव नहीं था। आधुनिक युग में विदेश यात्राओं का अवसर बढ़ गया है। अनेक साहित्यिक मनीषी देश-विदेश की यात्रा पर जाते रहते हैं। यात्रा वृत्तांतों में कुछ विदेशी शब्द तथा मुहावरे भी हिंदी भाषा में स्थान पाते जा रहे हैं। इस दृष्टि से हिंदी गद्य को समृद्ध बनाने की दिशा में यात्रा साहित्य का महत्वपूर्ण योगदान है।"[22]

डॉ. छोटू राम मीणा के अनुसार : "यात्रा इंसान के भीतर की एकरसता या कहें की नीरसता को खत्म करती है और अपने नए रूप को फैलाकर नये जीवन का संचार करती हैं।"[23]

अज्ञेय के अनुसार : "भ्रमण या देशाटन केवल दृश्य-परिवर्तन या मनोरंजन न हो कर सांस्कृतिक दृष्टि के विकास में भी योग दे, यही उसकी वास्तविक सफलता है।"[24]

डॉ. दीपेन्द्रसिंह जाडेजा के अनुसार :- किसी यात्रा को आधार बनाकर लिखा हुआ साहित्य यात्रा साहित्य हैं।

वर्तमान में यात्रा साहित्य, हिंदी गद्य साहित्य की बहुचर्चित विधा हैं। जिसका उद्देश्य विविध स्थानों की जानकारी उपलब्ध कराना, प्रकृति के सौंदर्य का चित्रण करना, धार्मिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक एवं विदेशी स्थलों के आकर्षण को उजागर करना और भिन्न-भिन्न प्रदेशों के लोगों के रहन सहन, खान पान, पहेरवेश व ऋतुओं की भिन्नता से अवगत करना है। देश दुनिया की संस्कृति के प्रति बढ़ती रूचि को देखने के लिए की जाने वाली 'यायावरी' या 'प्रवास' यात्रा विधा है। इसमें यात्राकार अपनी यात्रा के दौरान खुली आँखों से समाज एवं प्रकृति के तत्वों का उपभोग लेकर अनुभूत सत्य को सन्मुख रखता हैं। एवं भोगी हुई स्थिति का वर्णन करता है।

उपर्युक्त परिभाषाओं को समझते हुए कह सकते है कि- 'एक स्थान से दुसरे स्थान पर जाने की क्रिया यात्रा कहलाती है। 'यात्रा' शब्द के लिए गमन, प्रस्थान आदि शब्द भी प्रयुक्त होते है। हिंदी में प्रयाण और सफर इन शब्दों का भी प्रयोग होता है। गुजराती तथा मराठी में प्रवास तो अंग्रेजी में ट्रेवल शब्द का प्रयोग होता है।

इसी तरह हम यह कह सकते है कि- जब कोई व्यक्ति किसी विशेष उद्देश्य से एक स्थान से दूसरे स्थान की यात्रा करता हैं और दूसरे स्थान पर कुछ दिनों तक रहकर समय बिताता हैं, तथा उसके कुछ हेतु होते है ,कुछ नियोजन होते हैं। जब मनुष्य अपनी हेतु पूर्ति करके वापस लौटता हैं, एवं इस पूरी यात्रा के पश्चात वह अपने विचारों, मान्यताओं, ज्ञान, तथा विषय के संदर्भ को लिखित रूप देता हैं। इस सम्पूर्ण प्रक्रिया को यात्रा साहित्य कहते हैं। भोगी हुई स्थितियों की आत्मानुभूति एवं साहित्यिक प्रस्तृति, अभिव्यक्ति यात्रा-वर्णन, यात्रा-वृत्तांत कहलाता है।

1.3 यात्रा साहित्य की उपादेयता (महत्व) :

मनुष्य की सभ्यता के विकास मे यात्रा का गहरा संबंध जुड़ा हुआ है। वर्तमान मे दुनियां जहां पहुची है, इसके मूल मे अगर कोई कारण है, तो वह केवल यात्रा ही है। यात्राओं के माध्यय से एक संस्कृति का दूसरी संस्कृति से परिचय हुआ। विविध भौगोलिक परिस्थिति का ज्ञान प्राप्त हुआ। वैज्ञानिक आविष्कार यात्राओं के द्वारा हुए। यात्रा के कारण दुनिया मे भाईचारा विकसित हुआ। आज देश दुनिया के लोग एक

देश से दूसरे देश जाकर वहां का परिवेश देखते है, समाज व्ययस्था देखना चाहते है। यह सब यात्राओं के द्वारा संभव हुआ है ऐसा हम कह सकते है। डॉ. हरी सिमरन कौर भुल्लर इस संदर्भ मे कहती हैं-

"भ्रमण की प्रवृत्ति ने ही सामाजिक और आत्मिक उन्नति का मार्ग प्रशस्त किया। यात्रियों ने ही अनेक अज्ञात स्थलों और द्वीपों का अन्वेषण किया। संसार के अलग-अलग भागों में विकसित और एक-दूसरे से असम्पृक्त सभ्यताओं के बीच सम्पर्क स्थापित किया। दुर्गम स्थलों को सुगम बनाया। मार्गों का निर्माण ही नहीं किया, बल्कि यातायात के साधनों का विकास भी किया। पहिये के आविष्कार से ले कर अत्याधुनिक विमानों के पीछे भी यात्रा की उत्कट इच्छा ही कार्यरत रही है।"[25] यात्राओं के द्वारा नये नये स्थलों की खोज हुई। समाज का दायरा बढ़ने लगा व्यापार के साथ शादी विवाह जैसे सामाजिक संबंध भी बंधने लगे। यात्रा ने दो संस्कृतियों को परस्पर जोड़ने का कार्य किया। आगे डॉ. हरी सिमरन कौर भुल्लर कहती हैं- "मानव-चेतना के विकास में यात्रा की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। यात्रा व्यक्ति के अनुभव-क्षेत्र को समृद्ध बनाती है। यात्रा करते समय व्यक्ति जीवन-जगत् के विविध व्यापारों का प्रत्यक्ष दर्शन करता है। अलग-अलग स्वभाव के लोगों से मिलता है। प्रकृति और जन-जीवन के अनेक परिदृश्य उसकी संवेदना को जगाते हैं, उसे व्यापक बनाते हैं। अनुभव-संचय के साथ-साथ यात्रा ज्ञान-प्राप्ति का भी बेहतर माध्यम है, क्योंकि 'कागद-लेखी' की अपेक्षा 'आँखिन की देखी' (कबीर का कथन) पर आधारित ज्ञान अधिक ठोस और व्यापक होता है। उल्लेखनीय है कि विश्व के अधिकांश चिन्तक महान् घुमक्कड़ भी रहे हैं। उन्होंने 'कूपमंडूकता' को जड़ता का प्रतीक माना और 'भ्रमण' को विकास और चैतन्य का। ईसा मसीह, गौतम बुद्ध, महावीर, स्वामी शंकराचार्य, चैतन्य, रामानुजाचार्य जैसे मानवता के पथ प्रदर्शकों ने एक स्थल पर धूनी रमाने की अपेक्षा घूम-घूम कर जीवन को समझा और मनुष्य मात्र को उसके सत्य से परिचित कराया।"[26]

यात्रा के माध्यम से यायावर को नये अनुभव होते है। यात्रा हमे जीवन की वास्तविकता के दर्शन कराती है, भिन्न-भिन्न प्रकार के लोगों से मिलना उनकी विचारधारा को समझना यात्रा के द्वारा संभव हो सकता है। यात्रा के द्वारा पुरानी धारणाएं टूटती है। यात्रा नयी धारणाओं को जन्म देती है।

"इसी प्रकार यात्रा मनुष्य की अपरिहार्य आवश्यकता है, उसके जीवन का एक महत्त्वपूर्ण अंग है तथा उसके सर्वांगीण विकास का माध्यम है। यात्रा के मध्य व्यक्ति स्व, पर, देश-काल, जाति-धर्म इत्यादि की सीमाओं से ऊपर उठ कर व्यापक हृदय और उदार दृष्टिकोण से जीवन और जगत् का साक्षात्कार करता है। एक ओर यात्रा बाह्य जगत् के सत्यों से उसका परिचय कराती है; तो दूसरी ओर, स्वयं को भी जानने-

समझने का अवसर प्रदान करती है। उसके अन्तर्जगत् को समृद्ध करती है। उसकी भावनाओं, विचारों और कल्पनाओं को जागृत करती है।"[27]

यात्रा करने से सबसे पहला महत्वपूर्ण लाभ यह होता है कि, हमें भारत की भूमि और विदेश के स्थलों को निकट से देखने का अवसर प्राप्त होता है। विभिन्न स्थानों की नदियाँ, पर्वत, वन, बाँध और अन्य दर्शनीय स्थल देखने से हमारे ज्ञान में विस्तार होता है, और साथ ही यह भी समझ में आता है कि हमारी अपनी समझ और क्षमताएँ किस स्तर की हैं। किताबों, इतिहास और भूगोल में जो बातें पढ़ी हैं, उन्हें स्वयं प्रत्यक्ष अनुभव करने से मन को संतोष मिलता है। संसार के अनेक अद्भुत चमत्कारों को हम केवल यात्रा के माध्यम से ही देख और समझ सकते हैं।

यात्रा मनुष्य को आध्यात्मिक सुख देता है। भारतीय संस्कृति मे धार्मिक यात्राओं का अत्यंत महत्व है। भारत मे जन्मा किसी भी धर्म का व्यक्ति अपने सम्पूर्ण जीवन में धार्मिक तीर्थ स्थलों पर जरूर जाता है। इस धरती पर जन्मा प्रत्येक व्यक्ति किसी-न-किसी ईश्वर या आराध्य के समक्ष सिर झुकाता है। भले ही युवावस्था में यह भावना प्रबल न हो, लेकिन जीवन की अंतिम अवस्था में अधिकतर लोग धार्मिक गतिविधियों से जुड़ते हैं। अतः वृद्धावस्था में अनेक श्रद्धालु तीर्थयात्राओं और धार्मिक मेलों में भाग लेते हैं। इस प्रकार धार्मिक यात्रा का महत्व मन को अवर्णनीय सुख और शांति प्रदान करता है।

विभिन्न भाषाएँ, विभिन्न बोलियाँ, विभिन्न जातियाँ, धर्म, परिधान, प्रांत और परंपराएँ, इन सभी को प्रत्यक्ष रूप से अनुभव करने का अवसर केवल यात्रा के माध्यम से ही संभव हो पाता है। यायावर यात्रा के माध्यम से विविधता मे एकता ढूँढने के प्रयास करता है।

यात्राओं के द्वारा दुनिया के ऐतिहासिक स्थलों की जानकारी जुटाई जा सकती है। उन ऐतिहासिक स्थलों पर जाकर हमारे पूर्वजों के शौर्य गाथाओं से अवगत् होकर, अपने ज्ञान में वृद्धि की जा सकती है। विशेषतः अहिल्यादेवी होलकर, झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई, छत्रपति शिवाजी महाराज, राजे संभाजी आदि की कलाकृतियों को देख कर हमारी पुरानी परंपरा, विकास तथा संस्कृति की याद तरोताजा हो जाती है। पुराने किले, भवन, खंडहर, मंदिर, उनके अस्त्र-शस्त्र को देखकर अतीत के साथ हम वर्तमान में भविष्य के प्रति सींख लेते हैं। इसलिए यात्राओं का ऐतिहासिक महत्व भी अधिक हैं।

जब व्यक्ति यात्रा के माध्यम से अपने गाँव, अपने राज्य या देश की सीमाएँ पार करके, किसी नए स्थान पर पहुँचता हैं, तो वहाँ की जलवायु, वहाँ का वातावरण और संस्कृति उसके लिए नई होती है। ऐसे अजनबी

परिवेश में जब व्यक्ति किसी कठिनाई में पड़ता हैं, और वहाँ के स्थानीय लोग उसे सहानुभूति, सहायता, स्नेह, सम्मान और अपनापन प्रदान करते हैं, तो वह अनुभव मानवता की सच्ची मिसाल बन जाता है। संकट में सहायता करने वाले व्यक्ति ईश्वर तुल्य प्रतीत होते हैं। यही वह क्षण होते हैं जब इंसानियत की असली परीक्षा होती है। यही मानव धर्म की असली कसौटी होती है। यह यात्रा का सबसे महत्वपूर्ण बिंदु है, जो 'विश्व बंधुत्व' जैसी अवधारणाओं को मजबूत करता है। 'वसुधैव कुटुम्बकम्' यानी पूरी दुनिया एक परिवार है। इस महान विचार की सच्चाई यात्रा के अनुभवों से ही उजागर होती है।

इस प्रकार से यात्राओं का मानव जीवन व समाज में उपादेयता को रेखांकित करते हुए, यह कहाँ जा सकता है कि यात्रा जीवन का एक महत्वपूर्ण अंग है, जो व्यक्ति को नए-नए अनुभवों से रुबरु कराता है। और उसे जीवन की असीमित संभावनाओं का एहसास कराता है। इसके पश्चात यात्रा एक सुखद अनुभव होता है। जिसमें व्यक्ति अपने आसपास के वातावरण और सामाजिक संबंधों से भिन्न एक नए स्थान की जानकारी प्राप्त करता है। यात्रा व्यक्ति के भीतर नई ऊर्जा, नए उत्साह और जोश को जागृत करती है। जो उसे अपनी रूचि, नजरिया, और विचारों में बदलाव लाने में सहायक सिद्ध होता है। यात्राएं पौराणिक धारणाओं को तोड़ती है एवं नए व्यक्तित्व का निर्माण करती है।

1.5 तुलनात्मक अध्ययन एवं स्वरूप :

तुलना मानव की सहज प्रवृत्ति है। तुलना विकसित मस्तिष्क की प्यास से संपन्न ज्ञान यात्रा है। मानव सभ्यता के इतिहास में जब-जब आर्थिक, धार्मिक, प्राकृतिक या सांस्कृतिक कारणों से यात्राएं हुई है, तब-तब नए संपर्क स्थापित हुए है। वह चाहे शारीरिक, मौखिक या किसी अन्य प्रकार का हो। यही संबंध तुलनात्मक साहित्यिक अध्ययन का आधार-स्तंभ बनती है। हनुमान प्रसाद शुक्ल जी का मानना है कि "जब दो मानवों, समूहों, समुदायों या समाजों का मिलन होता है, तो तुलना स्वाभाविक है। नए संबंधों के स्थापित होने के साथ साम्यों, विषमताओं तथा सादृश्यताओं की चर्चा स्वतः संभव हो जाती है। यही बात साहित्यिक संबंधों पर लागू होती है। साहित्यिक संबंधता और अंतर्संबंधता का अध्ययन तुलनात्मक साहित्य की नींव के पत्थरों में से एक है। इस प्रकार का अध्ययन एक प्रकार से विचारों के इतिहास का अध्ययन होता है जिसके केंद्र में मुख्य बिंदु यह होता है कि वे किस प्रकार साहित्य के माध्यम से एक से दूसरे स्थान पर पहुँचते हैं तथा साहित्यों को प्रभावित करते हैं ? और एक साहित्य के तत्त्वों तथा परंपरा का दूसरे में किस प्रकार स्वीकरण होता है ?"[28] जिस तरह दो समुदाय, दो जाती, दो संस्कृति के मिलन से उनके समान एवं विषम गुणों को ज्ञात किया जा सकता है, उसी तरह से दो साहित्य, दो भाषाओं, दो युगों,

दो संस्कृतियों मे तुलनात्मक अध्ययन के द्वारा हम साहित्य एवं समाज के समान एवं विषम तत्वों को जान सकते हैं।

तुलनात्मक अध्ययन शोध दृष्टिकोण को संदर्भित करता है, जिसमें व्यवस्थित विश्लेषण और दो से अधिक देशकाल, घटना, चर या प्रणालियों की तुलना शामिल है। इसका उद्देश्य अध्ययन किए जा रहे तत्त्वों के बीच समानता व विषमता की पहचान करना है।

तुलनात्मक अध्ययन का अर्थ है, दो या दो से अधिक विषयों, वस्तुओं, या प्रणालियों के बीच समानताओं और विषमताओं (विभिन्नताओं) का मूल्यांकन करना या तुलना करना है। तुलनात्मक अध्ययन विषय के विभिन्न पहलुओं को समझने और विश्लेषण करने के लिए एक महत्वपूर्ण विधि है। इसके अंतर्गत दो या अधिक विषयों के बीच अनेक संबंधों की तुलना की जाती है ताकि उनकी विशेषताओं और अंतरों को समझा जा सके। इसका उद्देश्य समझ बढ़ाना, विवेचना करना और नए ज्ञान का उत्थान करना होता है।

"तुलना शब्द 'तुल'- तोलने धातु से भाववाचक संज्ञा के रूप में निर्मित हुआ है। 'तुल' धातु से ही तुला (तराजू) शब्द भी बना है। इस रूप में तुलना शब्द का अर्थ है बराबरी, मुकाबला एवं होड़। तोलने के अर्थ में भी किसी वस्तु के रूप एवं गुण का परीक्षण होता है।"[29] अतः तुलना का सामान्य एवं व्यावहारिक अर्थ है किन्हीं दो वस्तुओं या व्यक्तियों का कतिपय समान गुणों के आधार पर पूर्णतया जानने के लिए मूल्यांकन करना एवं उनके मध्य समानताओं और अंतरों को समझने का प्रयास करना ही तुलनात्मक शोध या तुलनात्मक अध्ययन है। "तुलनात्मक साहित्य अंग्रेजी के 'कम्पैरेटिव लिटरेचर' का हिंदी अनुवाद है। विदेश में इसे 'सांस्कृतिक अध्ययन' के नाम से भी जाना जाता है। अंग्रेजी के कवि मैथ्यू आर्नल्ड ने सन् 1848 में अपने एक पत्र में सबसे पहले 'कंपैरेटिव लिटरेचर' पद का प्रयोग किया था।"[30]

प्रो.आई.एन.चंद्रशेखर रेड्डी के अनुसार- "(Comparative) तुलनात्मक शब्द की व्याख्या शब्दकोश में इस प्रकार दी गयी है- Compare To bring to gether or side by side in order to note points of difference and more expecially likeness to note and express the resemblance between यानी तुलना के लिए दो वस्तुओं या साहित्यों में कुछ साम्य और कुछ अन्तरों का होना अनिवार्य है।"[31] दो या दो से अधिक वस्तुओं के गुण-दोषों की चर्चा करके उनमें से उत्कृष्ट-कनिष्ठता के गुणों को स्थापित करना, तुलनात्मक अध्ययन का प्रमुख प्रयोजन (कार्य, बिंदु) है।

"तुलनात्मक शब्द में तुलना करने की प्रक्रिया जुड़ी हुई है और तुलना में वस्तुओं को कुछ इस प्रकार प्रस्तुत किया जाता है, जिससे उनमें साम्य या वैषम्य का पता लग सके।"[32] अर्थात एक वस्तु को दूसरी वस्तु के साथ तौलकर बराबरी होने या बराबरी ना होने का संकेत देना, उनमें स्थित साम्य एवं भेद बताना ही तुलना है।

1.5 तुलनात्मक अध्ययन की परिभाषा :

तुलनात्मक अध्ययन के संदर्भ में विभिन्न विद्वानों के अलग-अलग मत देखने को मिलते हैं। ज्ञान के विभिन्न तत्वों के समान तुलनात्मक अध्ययन की क्या कोई सटीक परिभाषा हो सकती है? अनेक व्यक्ति, शिक्षक, विद्वान, अपनी दृष्टि, विचार को परिभाषा में जोड़ देते हैं, तत्पश्चात यह परिभाषाएं भिन्न-भिन्न स्वरूप को धारण कर लेती है। यहाँ कुछ प्रमुख परिभाषाओं को प्रस्तुत किया जा रहा है जो निम्नलिखित है-

पाश्चात्य विद्वानों के मतानुसार :

हेनरी एच.एच. रेमाक : "तुलनात्मक साहित्य एक राष्ट्र के साहित्य की परिधि के परे दूसरे राष्ट्रों के साहित्य के साथ तुलनात्मक अध्ययन है तथा यह अध्ययन कला, इतिहास, समाज विज्ञान, विज्ञान, धर्मशास्त्र आदि ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों के आपसी संबंधों का भी अध्ययन है।"[33]

आर.ए. साइसी (R.A.Sayce) **:** "तुलनात्मक साहित्य विभिन्नं राष्ट्रीय साहित्यों का एक-दूसरे के आश्रय से तुलनात्मक संबंधों का अध्ययन है।"[34]

पॉल वां टिगहेम : "राष्ट्रीय साहित्य का अध्ययन मात्र एक ही साहित्य से संबंधित प्रश्नों से अपना सरोकार रखता है और तुलनात्मक साहित्य का अध्ययन दो साहित्यों से जुड़ी हुई समस्याओं का विश्लेषण करता है।"[35]

टी.एस. इलियट : "तुलना और विश्लेषण आलोचक के प्रमुख औजार हैं। मूल्यांकनपरक आलोचना की श्रेष्ठता को मापने के लिए तुलनात्मक पद्धति का लाभ उठाती है।"[36]

क्लाइव स्काट : "तुलनात्मक साहित्य से विभिन्न भाषाओं में लिखित साहित्यों अथवा उसके संक्षिप्त घटकों की साहित्यिक तुलना होती है और यही उसका आधार तत्त्व है।"[37]

रेने वेलेक : "तुलनात्मक साहित्य के समग्र रूप का अन्तर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में अध्ययन करता है। जिसके मूल में यह भावना निहित रहती है कि साहित्यिक सृजन और आस्वादन की चेतना जातीय एवं राजनीतिक, भौगोलिक सीमाओं से मुक्त एकरस और अखंड होती है।"[38]

पासनेट : "साहित्य विकास के सामान्य सिद्धांतों का अध्ययन निश्चय ही तुलनात्मक साहित्य का महत्वपूर्ण अंग है।"[39]

हिंदी के विद्वानों के मतानुसार :

डॉ. नगेन्द्र : "तुलनात्मक साहित्य' एक प्रकार का अंतःसाहित्यिक अध्ययन है जो अनेक भाषाओं को आधार मानकर चलता है और जिसका उद्देश्य होता है- अनेकता में एकता का संधान।"[40]

इन्द्रनाथ चौधुरी : "तुलनात्मक साहित्य विभिन्न साहित्यों का तुलनात्मक अध्ययन है तथा साहित्य के साथ ज्ञान के दूसरे क्षेत्र का भी तुलनात्मक अध्ययन है।"[41]

गुजराती साहित्यकार डॉ. धीरूभाई परीख के अनुसार : "साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन करने की प्रवृत्ति एक प्रकार से समीक्षा प्रवृत्ति है। इसलिए वह आलोचना या समीक्षा के क्षेत्र की प्रवृत्ति होती है। यह प्रवृत्ति एक स्वतंत्र साधन के रूप में है। वह मीमांसा-समीक्षा की एक पद्धति है।"[42]

मराठी के विद्वान वसंत वापट के अनुसार : "तुलना' या संज्ञेचे अधिक स्पष्टीकरण करावयाचे झाल्यास 'साधर्म्य आणि वैधर्म्य, उद्गम आणि प्रभाव या चार अंगानी घेतलेला शोध' असे करता येईल।"[43] (साधर्म्य और वैधर्म्य उद्गम और प्रभाव इन चार बिंदुओं को आधार बनाकर किया गया शोधकार्य तुलना है।

उपर्युक्त परिभाषाओं के आधार पर तुलनात्मक साहित्य का स्वरूप स्पष्ट होता है। तुलनात्मक साहित्य का अध्ययन वह है, जहाँ एक से अधिक साहित्यों का उपयोग किया जाता है। तुलनात्मक साहित्य के अध्ययन में प्रत्येक अध्याय या पृष्ठ में तुलनात्मक होने की आवश्यकता नहीं पर उसकी दृष्टि, उद्देश्य तथा कार्यान्वयन को तुलनात्मक होना चाहिए। यहाँ एक से अधिक से तात्पर्य एक से अधिक भाषाओं,

रचनाकारों, कृतियों, युगों, प्रवृत्तियो से है। तुलनात्मक साहित्य की सर्वमान्य परिभाषा यही हो सकती है कि, तुलनात्मक अध्यायन वह अध्ययन है जहाँ किसी भी परस्पर विपरीत या समान गुणधर्म वाले साहित्य, व्यक्ति, स्थान परिस्थितियों आदि का विश्लेषण समान तत्वों के आधार पर किया जाए और एक निष्कर्ष निकाल जाए।

1.6 तुलनात्मक अध्ययन का महत्व :-

भारत विभिन्न भाषाओं का देश है। यहाँ पर हर एक भाषा का समृद्ध एवं विकसित साहित्य है। भारत के विभिन्न साहित्यों में जो समानांतर गतिविधियाँ मिलती है, उनके मूल कारणों को जानना आवश्यक है। यहाँ पर सांस्कृतिक चेतना पहले उत्पन्न हुई, राजनैतिक चेतना बाद में जन्मी है। इसी मूलवर्ती एकता का अनुसंधान अभी और होना है। भारतीय साहित्यों के समग्र स्वरूप का आकलन करने के लिए उनके विभिन्न प्रादेशिक साहित्यों के बीच तुलनात्मक अध्ययन होना अत्यंत आवश्यक है। आज इक्कीसवीं सदी में भूमंडलीकरण, बाजारवाद के कारण संपूर्ण विश्व एक 'विश्वग्राम' के रूप में उभरा है। ऐसे में तुलनात्मक साहित्य को अनेक कारणों से असाधारण महत्त्व प्राप्त हुआ है।

तुलनात्मक अनुसंधान अन्य शोध पद्धतियों में विशिष्ट है। अन्य शोध में जहाँ एक ही प्रमुख आयाम रहता है, वही तुलनात्मक अनुसंधान में दो या दो से अधिक आयाम रहते हैं। तुलनात्मक सामग्री भी दो या अधिक स्रोतों से इकट्ठा की जाती है। इंद्रनाथ चौधुरी इस संदर्भ में अपने मत प्रस्तुत करते है- "तुलनात्मक साहित्य राष्ट्रीय साहित्य के इतिहासों के झूठे अलगाव के खिलाफ लड़ता है। इसका अर्थ यह भी नहीं कि इस तुलनात्मक प्रक्रिया का उद्देश्य तारतम्यता का विवेचन है यानी एक को दूसरे के प्रतिद्वंद्वी के रूप में विश्लेषित करना है।"[44] इंद्रनाथ चौधुरी आगे बताते है "वस्तुतः तुलनात्मक साहित्य एक ओर जहाँ एकक साहित्याध्ययन को एक ऐसी पद्धति प्रदान करता है जिससे परिप्रेक्ष्य का विस्तार हो सके वहाँ दूसरी ओर राष्ट्रीय परिधि की संकीर्णता को तोड़ता हुआ विभिन्न राष्ट्रीय संस्कृतियों में प्रभावित प्रवृत्तियों और आंदोलनों की खोज करता है एवं मनुष्य की दूसरी ज्ञानात्मक क्रियाओं के साथ साहित्य के संबंधों को तोलता है।"[45] तुलनात्मक अध्ययन कई शाखाओं में किया जाता है, जैसे भाषा, साहित्य, सामाजिक विज्ञान, मानविकी, प्राकृतिक विज्ञान, अर्थशास्त्र, शिक्षा, सार्वजनिक स्वास्थ्य, आदि। इसमें गुणवत्ता मान सूचक या मात्रात्मक विधियाँ होती है, और यह दोनों का संयोजन भी हो सकता है। यह विषय पर निर्भर करता है कि अध्ययन के प्रश्न, डेटा उपलब्धता, और अध्ययन के उद्देश्य क्या हैं।

तुलनात्मक अध्ययन केवल समान-विषम तत्व प्रकट करने वाला न होकर सांस्कृतिक प्रवृत्तियों के संधान द्वारा मानवीय कार्यकलाप के अन्य क्षेत्रों के पारस्पारिक सम्बन्ध से भी परिचित कराता है। आचार्य विजयपाल सिंह ने तुलनात्मक अध्ययन के प्रयोजनों को इस प्रकार सूचीबद्ध किया है। "1.तुलनात्मक अध्ययन के द्वारा ऐसी विशेषताएँ उजागर होती हैं जो सामान्य अध्ययन से सम्भव नहीं है। 2. नवीन सन्दर्भ नवीन रूप में प्रकट होते हैं। 3. भाषा और साहित्य का गहन सम्बन्ध स्थापित होता है। 4. इसके द्वरा मशीन ट्रांसलेशन में सहायता मिलती है। 5. पारस्परिक आदान-प्रदान द्वारा भाषाओं और साहित्यों के क्षितिज विस्तृत होते हैं। 6. तुलनात्मक अध्ययन पूर्वाग्रहों से मुक्ति दिलाता है। 7. एक ही देश की विविध इकाइयों को परस्पर निकट आने को प्रोत्साहन मिलता है।"[46] मैदान में आने के बाद दो टीमों, दो खिलाड़ियों, दो देशों की शक्ति साबित होती है, वैसे ही दो भिन्न भाषा-भाषी साहित्य का साहित्यकारों की तुलना के बाद उनकी सांस्कृतिक, सामाजिक, मानसिक, एवं वैचारिक दृष्टि तथा स्थितियों का, उनकी वास्तविकता का पता चलता है।

तुलनात्मक अध्ययन के महत्व को हम संक्षेप में निम्नलिखित बिंदुओं के माध्यम से समझने का प्रयास करेंगे –

पूर्वाग्रह से मुक्ति- "तुलनात्मक अध्ययन से हमारे परिचय क्षेत्र का विस्तार होता है। अपरिचित एवं अज्ञान या अजनबी क्षेत्रों के संबंधों के संपर्क से हम परिचित होने लगते हैं, जानने लगते हैं। अतः इसका परिणाम यह होता है कि हम पूर्वाग्रहों से मुक्त होना सीखते हैं। तुलनात्मक साहित्य के माध्यम से दृष्टिकोण में विस्तार आता है। संकुचित मनोवृत्ति से मुक्ति मिलती है। हम औरों के महत्व को स्वीकार करने लगते हैं और उनसे रागात्मक संबंध स्थापित करते हैं।"[47] इससे स्पष्ट होता है कि, तुलनात्मक अध्ययन पूर्वाग्रह से मुक्ति प्राप्त करने में मदद करता है, और नई प्रेरणा का संचार तथा प्रासंगिकता का पुनर्निर्माण करता है जिससे व्यक्तियों को नई सोच और दृष्टिकोण की प्रेरणा मिलती है। यह उन्हें विविधता और बदलाव को स्वीकार करने की क्षमता प्रदान करता है और उन्हें सामाजिक संदेशों को समझने में मदद करता है।

ज्ञानक्षेत्र का विस्तार - आचार्य सुंदर रेड्डीजी के अनुसार "तुलनात्मक अध्ययन मानव के सीमित ज्ञानक्षेत्र का विस्तार करता है। देश की एकता के लिए विभिन्न भारतीय भाषाओं एवं साहित्यों का तुलनात्मक अध्ययन आवश्यक ही नहीं, अनिवार्य भी है।"[48] "डॉ. टी. मोहन सिंह ने अपने लेख में डॉ. शिव सत्यनारायण के इस कथन को उद्धृत करके इस बात का अनुमोदन किया है। यह कथन है "तुलनात्मक अध्ययन मानव के सीमित ज्ञान क्षेत्र को विस्तृत करता है और उसके भाषागत, साहित्यिक

एवं प्रादेशिक बंधनों को ज्ञानार्जन में बाधा डालने नहीं देता।"[49] उक्त विद्वानों के मतानुसार यह ज्ञात होता है कि, तुलनात्मक अध्ययन विभिन्न विषयों की हमारी समझ का विस्तार करके ज्ञान की उन्नति में योगदान करता हैं। वे शोधकर्ताओं को नए दृष्टिकोण प्रदान करता हैं, मौजूदा मान्यताओं को चुनौती देता हैं, और आगे की खोज तथा अनुसंधान के लिए रास्ते खोलता हैं।

विविध साहित्यों और कलाओं के पारस्परिक संबंधों के प्रेरक- "रेमाक ने कहा है कि तुलनात्मक साहित्य एक राष्ट्र के साहित्य की परिधि के परे दूसरे राष्ट्रों के साहित्य के साथ तुलनात्मक अध्ययन है तथा यह अध्ययन कला, इतिहास, समाजविज्ञान, धर्मशास्त्र आदि ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों के आपसी संबंधों का भी अध्ययन है। यह साहित्य से साहित्य की कलाओं, मानव संस्कृतियों आदि को जोड़ता है। उनके बीच के संदर्भ संबंधों की चर्चा करता है। तुलनात्मक अध्ययन का मूल उद्देश्य एक विस्तृत परिप्रेक्ष्य में विभिन्न भाषाओं के साहित्यों का अध्ययन है। जिससे उसका उचित अभिज्ञान या रसास्वादन हो सके तथा उन भाषाओं के साहित्यों के बारे में एक समुचित विचारधारा का विकास हो सके।"[50] तुलनात्मक साहित्य बहुसांस्कृतिक समाज में विशेष रूप से प्रासंगिक है, जहां विभिन्न भाषाएं, विभिन्न संस्कृतियां और साहित्यिक परंपराएं सह-अस्तित्व में हैं। वहां तुलनात्मक अध्ययन समाज के भीतर विविध समुदायों के साहित्यिक उत्पादन की खोज और सराहना के लिए एक रूपरेखा प्रदान करता है।

पाठक, आलोचक एवं समाज की चेतना जागृति - डॉ.स्वीटी घुघरावाला तुलनात्मक अध्ययन का महत्व बताते हुए लिखती है कि- "तुलनात्मक साहित्य दो साहित्यों से जुड़ी हुई समस्याओं का विश्लेषण करता है। तुलनात्मक पद्धति के अन्वेषक की दृष्टि सूक्ष्मतर होकर अतल गहराई में स्थित काव्य की अंतरात्मा का स्पर्श कर लेती है। इतना ही नहीं, किसी विषय के एकांगी अध्ययन की अपेक्षा तुलनात्मक अध्ययन के वक्त इन साहित्यों का प्रभाव रहता है। यह अध्ययन सर्वभोग्य बनता है। तब पाठक पर भी प्रभाव पड़ता है और चेतना की जागृति होती है। वह चेतना प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से समाज पर और साहित्य पर भी प्रतिबिंबित होती है।"[51] अर्थात तुलनात्मक अध्ययन के द्वारा मनुष्य की चेतना शक्ति का विकास होता है, एवं उसके दो पहलुओं को देखने व परखने के दृष्टिकोण में बदलाव आता है। अतः हम कह सकते है कि, तुलना के माध्यम से पाठकवर्ग में विचारशक्ति-तर्कशक्ति का कौशल का विकसित होता है।

अनुवादों का प्रेरक - डॉ.स्वीटी घुघरावाला तुलना के महत्व को प्रतिपादित करते हुए लिखती है- "तुलनात्मक साहित्य में अनुवाद का महत्वपूर्ण स्थान है। साथ ही साथ साहित्यों की तुलनात्मक

आलोचना होती है। यह सत्य है कि यहाँ अध्येता अध्ययन कृति को समझकर उसका अनुवाद करता है। इसका सूक्ष्म अध्ययन करके उसकी आत्मा तक पहुँचता है। वह अज्ञात कृति को समझकर उसका अनुवाद करके लोकभोग्य बना देता है। उसमें व्यक्त विचारों, जीवन-दृष्टि आदि से विश्व के साहित्य का प्रसार हो जाता है। विश्व के अज्ञात साहित्यकारों और साहित्य के प्रति ज्ञान पिपासु सहज ही आकर्षित हा उठता है।"[52] तुलनात्मक अध्ययन अनुवाद को महत्व देता है। अनुवाद के ज्ञान के बिना तुलना संभव नहीं है। भिन्न-भिन्न साहित्य की तुलना से नए साहित्य सिद्धांत एवं तत्त्वों की खोज की जाती है। उसी तरह पुराने साहित्य सिद्धांतो एवं तत्त्वों की योग्यता-अयोग्यता की जाँच-पड़ताल की जाती है। आज तक हम साहित्य किसी व्यक्ति द्वारा निर्मित मानते थे परंतु तुलनात्मक अध्ययन उसे राष्ट्रीय अंतरराष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में देखने का नज़रिया देता है। दूसरों में खुद को जाँचने का माध्यम तुलनात्मक अध्ययन है। जिससे खुद की सच्ची पहचान बनती है। किसी कृति का अलगपन बिना तुलना किए समझना मुश्किल है, इसलिए दो कृतियों, साहित्य सिद्धांत, दो भाषाओं में अनुवाद का विशेष महत्व है। यह तुलना को गति प्रदान करता है। इससे स्पष्ट है कि, तुलनात्मक अध्ययन संसार को मानवीय मूल्यों की एक कडी में जोड़ता है और मनुष्य को मनुष्य की तरह जीने का मार्ग दिखाकर मानव से विश्व मानव की संकल्पना (स्थापना) को पूर्ण करता है।

नई सूचना, विचारशैली का आविष्कार - तुलनात्मक अध्ययन द्वारा नई सूचना प्राप्त होती है। यह अध्ययनकर्ताओं को अपूर्णताओं का पता लगाने और अध्ययन क्षेत्र में नए अविष्कार तथा नए प्रश्नों के माध्यम से निर्णय तक पहुंचने में सहायक सिद्ध होता है। इसके अंतर्गत नई सूचना के द्वारा पुरानी मान्यताओं का खंडन करके नवीन संदर्भों का आविष्कार किया जाता है। तुलना के महत्व का प्रस्तुत बिंदु, विविधता और बदलाव को स्वीकार करने की क्षमता प्रदान करता है, इससे नई जानकारी का सृजन और नई धारणाओं की स्थापना होती है।

संक्षेप में तुलनात्मक अध्ययन अनेक दृष्टियों से मानव जाति के विकास का साधन है। तुलना के द्वारा व्यक्ति, समाज, विषय के भेद, उनमें अंतर और समानता को समझने के विचार, एवं कारणों और प्रभावों की पहचान करने की दृष्टि हमें प्राप्त होती है। विभिन्न परंपराओं के साथ जुड़कर तुलनात्मक साहित्य मानवीय अनुभव की हमारी समझ को समृद्ध करता है। हमारे साहित्यिक ज्ञान को समृद्ध करता है, हमारी धारणाओं को चुनौती देता है और हमारे ज्ञान के क्षितिज को व्यापक बनाता है। इसलिए कहना उचित

होगा कि, वर्तमान साहित्यिक दुनिया मे तुलनात्मक अध्ययन का विशेष महत्व हैं, इसे विश्व के सारे देशों ने, सारे साहित्यकारों ने स्वीकार किया है।

1.7 तुलनात्मक अध्ययन की आवश्यकता :

तुलनात्मक अध्ययन की आवश्यकता कई कारणों से महत्वपूर्ण होती है। अध्ययन क्षेत्र के विषय से संबंधित विशेषताओं की समझ तुलनात्मक अध्ययन द्वारा संभव होती है। तुलनात्मक अध्ययन द्वारा विषय की गहराई तक पहुँचा जा सकता है। यह अध्ययनकर्ताओं को दो या दो से अधिक विषयवस्तु, प्रणालियों, या घटनाओं को तुलना करके उनमें समानताएं और अंतर की पहचान में मदद करता है। इससे तुलना की गई वस्तु के कारण प्रभाव संबंधों, नियमितताओं, और मूल्यों का पता लगाने में मदद मिलती है।

यहाँ कुछ मुख्य बिंदु के माध्यम से हम तुलनात्मक अध्ययन के आवश्यकता के कारणों को जानने का प्रयास करेंगे। जो निम्नलिखित है।

1. तुलनात्मक अध्ययन भाषा और साहित्य के आपस में संपर्क स्थापित करने को बढ़ावा देता है।

2. एक भाषा साहित्य के शोध अध्ययन के लिए दूसरी भाषा और साहित्य की सामग्री का उपयोग किया जाता है।

3. तुलनात्मक अध्ययन में, दो भाषाओं के बीच अनुवाद और मशीनी अनुवाद के द्वारा ज्ञान के विस्तार को बढ़ाया जा सकता हैं।

4. तुलनात्मक अध्ययन द्वारा तुलनीय पक्षों की ऐसी विशेषताओं को उद्घाटित किया जाता है, जो सामान्य अध्ययन के द्वारा प्रकाश में नहीं आ पाती है।

5. तुलनात्मक अध्ययन मानव के सीमित ज्ञानक्षेत्र को विस्तार प्रदान करता है और उसके भाषागत, साहित्यिक एवं प्रादेशिक बंधनों को तोड़कर ज्ञानार्जन में बाधा नहीं डालने देता है।

6. पारस्परिक संपर्क और आदान-प्रदान के माध्यम से भाषा और साहित्य का दायरा बढ़ाया जा सकता है। इससे साहित्य की सीमा- रेखा को विस्तार दिया जा सकता है।

7. तुलनात्मक अध्ययन के द्वारा विभिन्न साहित्य की समानता एवं विषमताओं का विवेचन करके उनके कारणों की जांच-पड़ताल की जाती है। इसके अंतर्गत दो साहित्य, संस्कृति, समाज का मूल्यांकन किया जाता है। तथा विश्व मानव एवं विश्व-मानवतावाद को निर्धारित किया जाता है। तुलनात्मक अध्ययन मूल्यांकन की दृष्टि से अत्यंत आवश्यक है।

8. भारत की एकता में अनेकता के दर्शन तथा किसी भी देश की विविधता के अंतदर्शन कराने में तुलनात्मक अध्ययन की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। यह दो या दो से अधिक सभ्यता, संस्कृति, समाज को आपस में जोड़ने का कार्य करता है।

9. तुलनात्मक अध्ययन व्यक्ति को भाषा, साहित्य, देशकाल के बंधन से मुक्त करता है , तथा ज्ञानार्जन का अवसर प्रदान करता है।

10. "ज्ञान-विज्ञान की नई दिशाओं का उद्घाटन, भाषाशैली एवं अभिव्यंजना की मनोहारी अभिनव छटाओं का दिग्दर्शन, राष्ट्रीय एवं भावनात्मक ऐक्य का विश्वसनीय प्रतिपादन, विश्व मानव चेतना का संश्लेषण बहुमुखी प्रकट रूप, जाति, धर्म एवं रूढ़ियों द्वारा आरोपित भिन्नता में अन्तर्हित सामाजिक आदर्श एवं त्याग प्रधान भारतीय संस्कृति का संस्थापन एवं अनेक न्यूनताओं के प्रति सतर्कता तुलनात्मक अध्ययन द्वारा संभव है।"[53]

"तुलनात्मक अध्ययन से हमें यह अनुभव प्राप्त होता है कि हमारी भाषा का साहित्य ही सर्वश्रेष्ठ नहीं है, बल्कि विभिन्न देश प्रदेशों की भाषा-भूमियों के बीच बहने वाली हमारी वैचारिक एवं भावात्मक जीवन संहिता एक है।"[54] तुलनात्मक अध्ययन से प्राप्त जानकारी और प्रमाण पर आधारित निष्कर्ष निकाला जा सकता है। यह अनुसंधानकर्ताओं को अधिक सटीक और प्रामाणिक विश्लेषण करने में मदद करता है और उन्हें अपने अध्ययन क्षेत्र में नए निष्कर्ष प्रस्तुत करने की क्षमता प्रदान करता है।

उपर्युक्त सभी आयामों के अध्ययन के उपरांत हम यह कह सकते है कि तुलनात्मक अध्ययन अनिवार्य रूप से एक श्रेष्ट अध्ययन है जिसके द्वारा अनुसंधानकर्ता विभिन्न विषयों को समझ कर, उनकी संगठित जानकारी प्राप्त कर सकता है, और नए ज्ञान का निर्माण कर सकता है। यह अध्ययनकर्ताओं को विस्तृत और पूर्णतः विचारशील दृष्टिकोण प्रदान करने में सहायक सिद्ध हुआ है, और उन्हें अपने क्षेत्र में अग्रणी और नवाचारी बनाने में सफल हुआ है। उक्त विशेषताओं को ध्यान में रखकर यह ज्ञात होता है कि वर्तमान में तुलनात्मक अध्ययन की खूब आवश्कता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1) प्रो. अक्षय कुमार गोस्वामी, काव्य प्रभा, पृष्ठ सं. 54

2) वही, पृष्ठ सं. 5

3) https://www.indiagolddays.com

4) सुरेन्द्र माथुर, यात्रा साहित्य का उद्भव और विकास पृष्ठ सं. 15

5) वही पृष्ठ सं. 15

6) https://www.indiagolddays.Com

7) https://www.indiagolddays.com

8) दीपक पाटिल, यात्रा साहित्य का इतिहास, पृष्ठ सं. 49

9) वही पृष्ठ पृष्ठ सं.10

10) वही पृष्ठ सं.12

11) श्री प्रकाश शुक्ल, देश देश परदेस, पृष्ठ सं.10

12) दीपक पाटिल, यात्रा साहित्य का इतिहास, पृष्ठ सं.10

13) वही पृष्ठ सं.11

14) वही पृष्ठ सं.11

15) वही पृष्ठ सं.12

16) वही पृष्ठ सं.12

17) वही पृष्ठ सं.12

18) वही पृष्ठ सं.12

19) श्री प्रकाश शुक्ल, देश देश परदेस, पृष्ठ सं. 10

20) वही पृष्ठ सं.11

21) डॉ. हरी सिमरन कौर भुल्लर, समकालीन यात्रा वृत्तों में सांस्कृतिक संदर्भ, पृष्ठ सं.04

22) डॉ. बाबूराव देसाई, यात्रा साहित्य विधा शास्त्र और इतिहास, पृष्ठ सं. 32

23) पुष्पगंधा, संपादक-विकेश निझावन, पृष्ठ सं. 22

24) अज्ञेय, अरे यायावर रहेगा याद, पृष्ठ सं. 7

25) डॉ. हरी सिमरन कौर भुल्लर, समकालीन यात्रा वृत्तों में सांस्कृतिक संदर्भ, पृष्ठ सं. 4

26) वही, पृष्ठ सं. 4

27) वही पृष्ठ सं. 5

28) हनुमानप्रसाद शुक्ल, तुलनात्मक साहित्य सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्य, पृष्ठ सं. 128

29) प्रो.आई.एन.चंद्रशेखर रेड्डी, तुलनात्मक अध्ययन निकष एवं निरूपण, पृष्ठ सं. 13

30) इन्द्रनाथ चौधुरी, तुलनात्मक साहित्य भारतीय परिप्रेक्ष्य, पृष्ठ सं.13

31) प्रो. आई.एन.चंद्रशेखर रेड्डी, तुलनात्मक अध्ययन निकष एवं निरूपण, पृष्ठ सं. 13

32) वही, पृष्ठ सं.17

33) वही, पृष्ठ सं.17

34) वही, पृष्ठ सं.28

35) वही, पृष्ठ सं.29

36) प्रो. आई.एन.चंद्रशेखर रेड्डी, तुलनात्मक अध्ययन निकष एवं निरूपण, प्रकाशन संस्थान - नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2009, पृष्ठ सं. 13

37) वही, पृष्ठ सं.14

38) वही, पृष्ठ सं.14

39) डॉ. स्वीटी घुघरावाला, हिन्दी गुजराती दलित कहानियों का तुलनात्मक अध्ययन, पृष्ठ सं.118

40) वही, पृष्ठ सं.118

41) वही, पृष्ठ सं.118

42) वही, पृष्ठ सं.117

43) डॉ. अलका निकम वागदरे, नागार्जुन और नारायण सुर्वे के काव्य में प्रगतिशील चेतना, पृष्ठ सं.58

44) इन्द्रनाथ चौधुरी, तुलनात्मक साहित्य भारतीय परिप्रेक्ष्य, वाणी प्रकाशन - नयी दिल्ली, संस्करण 2018, पृष्ठ सं.23

45) वही, पृष्ठ सं.24

46) प्रो. आई.एन.चंद्रशेखर रेड्डी, तुलनात्मक अध्ययन निकष एवं निरूपण, प्रकाशन संस्थान - नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2009, पृष्ठ सं. 17

47) डॉ. स्वीटी घुघरावाला, हिन्दी गुजराती दलित कहानियों का तुलनात्मक अध्ययन, चिन्तन प्रकाशन - कानपुर, प्रथम संस्करण 2014, पृष्ठ सं.125

48) वही, पृष्ठ सं.125

49) वही, पृष्ठ सं.125

50) वही, पृष्ठ सं.125

51) वही, पृष्ठ सं.125

52) वही, पृष्ठ सं.126

53) वही, पृष्ठ सं.128

54) वही, पृष्ठ सं.128